हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला, हिमाचल प्रदेश

“चिलगोजा के संरक्षण एवं स्थायी प्रबंधन की आवश्यकता” पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 30 नवम्बर, 2020 को ग्राम पंचायत स्पीलो, जिला किन्नौर, हिमाचल प्रदेश में चिलगोजा प्रजाति के सरंक्षण के लिए राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक द्वारा वित्त पोषित परियोजना **“कल्पा एवं पूह वन परिक्षेत्र, जिला किन्नौर, हिमाचल प्रदेश में वैज्ञानिक हस्तक्षेप के माध्यम से चिलगोजा के संरक्षण के लिए जागरूकता”** के तहत **“चिलगोजा के संरक्षण एवं स्थायी प्रबंधन की आवश्यकता ”** विषय पर एक दिवसीय जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें ग्राम पंचायत स्पीलो के 40 किसानों एवं बागवानों ने भाग लिया । इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान वन परिक्षेत्र अधिकारी, श्री प्रताप सिंह, श्री विद्या चंद, खंड अधिकारी, श्री सोनम छेतन, वन रक्षक, श्री देव सिंह, उप- प्रधान, ग्राम पंचायत स्पीलो भी उपस्थित रहे।

डॉ स्वर्ण लता, वैज्ञानिक- सी, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने सभी प्रतिभागियों का प्रशिक्षण कार्यक्रम में पधारने पर हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया। उन्होंने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए बताया कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला, पश्चिमी हिमालयी क्षेत्रों हिमाचल प्रदेश और जम्मू कश्मीर तथा लद्दाख केन्द्र शासित प्रदेशों में वानिकी के क्षेत्र मे शोध कार्य कर रहा है । साथ ही साथ उन्होने संस्थान में होने वाली शोध कार्यों एवं वर्तमान गतिविधियों से भी प्रतिभागियों को अवगत कराया । अपने संबोधन में वैज्ञानिक डॉ. स्वर्ण लता ने यह भी कहा कि चिलगोजा जिला किन्नौर का परिस्थितिक, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से एक महत्वपूर्ण वृक्ष है । यह किन्नौर के लोगों की आय का मुख्य स्त्रोत होने के साथ-साथ उनके आहार एवं रीति-रिवाजों का भी अभिन्न् अंग है । हिमाचल प्रदेश में यह प्रजाति किन्नौर (2040 हेक्टेयर) तथा चम्बा (20 हेक्टेयर) जिले में पायी जाती है, परन्तु चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए की जाने वाली शाखाओं की अवैज्ञानिक तरीके से कटाई आज के समय में किन्नौर वन क्षेत्र की बहुत बड़ी समस्या बनी हुई है जिससे न केवल

वृक्षों को अत्याधिक क्षति पहुँच रही है अपितु प्राकृतिक पुनर्जनन के साथ-2 पैदावार में भी कमी हो रही है । यदि यह स्थिति यथावत बनी रही तो वह दिन दूर नहीं जब यह वृक्ष इस क्षेत्र से लुप्त हो जायेँगे और लोग इससे होने वाले सभी प्रकार के लाभ से हमेशा के लिए वंचित हो जायेँगे । इसलिए इस तरह की विनाशकारी कटाई से होने वाले नुकसान से बचने के लिए न केवल वैज्ञानिक हस्तक्षेप अपितु लोगों के हस्तक्षेप की भी अत्याधिक आवश्यकता है ताकि इस क्षेत्र में चिलगोजा वृक्षों को हो रही क्षति से बचाया जा सके । इससे न केवल आने वाली भावी पीढ़ियों को इस बहुमूल्य वन सम्पदा का लाभ पहुंचेगा अपितु अन्य पर्यावरणीय सेवायेँ भी प्राप्त होती रहेंगी ।

इसके उपरांत तकनीकी सतर के दौरान डॉ स्वर्ण लता ने कहा कि चिलगोजा को 'चट्टानी पर्वत के विजेता' के नाम से भी जाना जाता है। यह किन्नौर जैसे नाज़ुक क्षेत्र की ढीली एवं नाज़ुक मिट्टी के कटाव को रोकने की अत्याधिक क्षमता रखता है । चिलगोजा प्रजाति के नष्ट होने से लोगों को आर्थिक नुकसान होगा अपितु यहाँ के लोगों को सामाजिक एवं पर्यावरणीय नुकसान भी होगा । उन्होने 'चिलगोजा के संरक्षण एवं स्थायी प्रबंधन की आवश्यकता' एवं 'चिलगोजा वन संरक्षण में सामुदायिक योगदान के महत्व' के बारे लोगों को विस्तृत जानकारी दी तथा प्रतिभागियों से कहा कि यह किन्नौर में रहने वाले हर एक नागरिक की जिम्मेदारी है कि वे चिलगोजा जैसे अनमोल प्राकृतिक संसाधन की रक्षा के लिए स्वेच्छा से आगे आकर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें ।

वन परिक्षेत्र अधिकारी, श्री प्रताप सिंह ने अपने व्याख्यान में किसानों तथा बागवानों को “चिलगोजा के नर्सरी तकनीक एवं रोपण” एवं ‘चिलगोजा के पैदावार को बढ़ाने के लिए वृक्षारोपण हेतु अच्छी गुणवता के पौधों के चयन के आवश्यकता’ के बारे में विस्तृत जानकारी दी । उन्होंने यह भी आग्रह किया कि यदि वनों में अच्छी गुणवता वाले वृक्ष दिखें तो उसकी जानकारी वे वन विभाग के अधिकारियों को अवश्य दें ताकि वे उसी गुणवता वाले पौधों की नर्सरी तैयार कर सकें । जिससे न केवल चिलगोजा के बीजों की पैदावार बढ़ेगी अपितु किसानो को बीजों के व्यापार में भी अधिक मुनाफा होगा । इसी दौरान लोगों ने चिलगोजा से सम्बंधित अपनी समस्याएँ भी उनके समक्ष रखी एवं उन्होने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

श्री विद्या चंद, खंड अधिकारी ने अपने व्याख्यान में किसानों तथा बागवानों को 'चिलगोजा वन क्षेत्र की समस्याओं तथा उनके समाधान' के बारे में लोगों को जागरूक किया। उन्होने आशा व्यक्त की कि इस प्रशिक्षण से स्पीलो पंचायत के किसान तथा बागवान लाभान्वित होंगे तथा वैज्ञानिक विधि से चिलगोजा शंकुओं का दोहन करेंगे जिससे यह पौधा तथा इसके जंगल भविष्य में भी विद्यमान रहेंगे ।

इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए श्री देव सिंह, उप प्रधान ग्राम पंचायत, स्पीलो, ने संस्थान के प्रयास की सराहना की और कहा चिलगोजा के जंगलों के सरंक्षण के लिए जो पहल हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने की है उससे उनके गांव के किसान एवं बागवान ज़रूर जागरूक एवं लाभान्वित होंगे। उन्होंने भविष्य में भी इस तरह के कार्यक्रमों के आयोजन का आग्रह किया।

कुमारी वर्षा एवं अजय कुमार, कनिष्ठ परियोजना अध्येता, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने 'मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रूनर के संचालन तथा इसकी सहायता से चिलगोजा शंकुओं को तोड़ने की विधि' के बारे में लोगों को साथ के चिलगोजा वन क्षेत्र में ले जाकर बताया तथा इस तकनीक का प्रदर्शन किया। इसी दौरान चार मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रूनर भी पंचायत को प्रदान किये गये।

अंत में डॉ. स्वर्ण लता ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित पूह वन परिक्षेत्र के अधिकारियों तथा किसानों- बागवानों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया। उन्होंने चिलगोजा परियोजना में प्रस्तावित जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन हेतु सभी आवश्यक सुविधायें प्रदान करने के लिए निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला एवं वित्तीय सहायता के लिए राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड), शिमला, हिमाचल प्रदेश का भी धन्यवाद किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां

चिलगोजा के संरक्षण और
स्थायी प्रबंधन की आवश्यकता
NABARD
पर
एक दिवसीय जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम
30 नवम्बर, 2020
ग्राम पंचायत स्पीलो, जिला किन्नौर, हिमाचल प्रदेश
आयोजकः हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान
राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक, शिमला